

वैदिक जीवन दर्शन धर्मार्थ न्यास

द्वारा संचालित

गुरुकुल

हमारे आर्यावर्त में आज से लगभग 5000 वर्ष पूर्व वैदिक रीति से ही समस्त व्यवहार सिद्ध किया जाता था। संपूर्ण संस्कृति, सभ्यता, विज्ञान, अर्थव्यवस्था, दण्डनीति आदि वेद के अनुसार ही विकसित थी। इसी हेतु से पूरे विश्व पर हमारे देश का वर्चस्व बना रहा। यही का राजा संसार का चक्रवर्ती राजा बनता था। सब मनुष्य सुख, शान्ति व प्रसन्नता से जीते थे। आज की स्थिति इससे सर्वथा विपरीत है। कारण है हमारे द्वारा अपनी वैदिक संस्कृति का त्याग। हमारे देश की खोई हुई गरिमा को वापस लाने का एक मात्र मार्ग यही है कि हम पुनः वैदिक रीति से व्यवस्थाओं को खड़ा करें। इसके लिए आवश्यक है कि हम उस व्यवस्था का अंश व्यक्ति का निर्माण इस प्रकार करें कि वह अपने जीवन में वैदिक संस्कृति को अपना कर एक वैदिक स्वावलंबी स्वावलंबी समाज का निर्माण कर सके। इसी दिशा में इस गुरुकुल का आरंभ किया जा रहा है।

प्रवेश के नियम

1. सामान्यतः 18 वर्ष अधिक उम्र के युवक को परीक्षण पूर्वक सीमित संख्या में प्रवेश दिया जाता है।
2. युवक स्वस्थ, बुद्धिमान एवं सुसंस्कारी होना चाहिए।
3. विद्यार्थी को पूर्ण अनुशासन में रहना अनिवार्य है।
4. पाठ्यक्रम 3 वर्ष का होगा जिसमें दर्शन शास्त्र, धर्मशास्त्र एवं अर्थशास्त्र का सामान्य अध्ययन होगा। इसके साथ साथ कृषि, गोपालन व अन्य स्वावलंबन की शिक्षा भी दी जाएगी। स्वास्थ्य के मौलिक नियमों का भी प्रशिक्षण दिया जाएगा।
5. विद्यार्थी अध्ययन काल में घर नहीं जा सकेगा।
6. अध्ययन काल में घर व बाहरी संसार से किसी भी प्रकार का संबंध नहीं रखना होगा। मोबाइल व अन्य उस प्रकार के साधनों का प्रयोग की स्वीकृति नहीं होगी।

7. विद्यार्थियों को आवास, भोजन वस्त्र आदि आवश्यक सामग्री व व्यवस्था गुरुकुल की ओर से विना भेद भाव के निशुल्क दी जाएगी।
8. विद्यार्थी धन व व्यक्तिगत सामान नहीं रख सकेगा।
9. अध्ययन काल में विद्यार्थी को किसी भी रूप में प्राप्त धन व वस्तु गुरुकुल के होंगे।
10. प्रवेश देने, न देने तथा गुरुकुल से निष्कासन करने, न करने संबन्धी अन्तिम निर्णय आचार्य का होगा।
11. आवश्यकता होने पर नियमों में परिवर्तन करने व किसी विद्यार्थी को किसी नियम में छूट देने का अधिकार आचार्य के पास होगा।

दिनचर्या

प्रातः जागरण		4.00 बजे
नित्यकर्म, व्यायाम व स्नान		4.00 से 5.30
संध्योपासना		5.30 से 6.15
अध्ययन, सेवा		6.15 से 7.00
यज्ञ व स्वाध्याय		7.00 से 7.50
प्रातराश (अल्पाहार)		7.50 से 8.15
अध्ययन, सेवा		8.15 से 12.00
भोजन, विश्राम	दो पहर	12.00 से 1.30
अध्ययन, सेवा		1.30 से 4.00
सामूहिक कार्य, व्यायाम, स्नान	शाम	4.00 से 6.00
संध्योपासना		6.00 से 6.45
भोजन		6.45 से 7.30
अवकाश		7.30 से 8.15
श्लोक गान व अत्म निरीक्षण		8.15 से 9.00
शयन	रात	9.00 से 4.00 प्रातः